'मैं कविता की खिड़कियां बनाता हूं, जो हमेशा खुली रहती हैं'

जासं, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी ने सोमवार को अपने प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'प्रवासी मंच' के अंतर्गत इंग्लैंड से आए कवि मोहन राणा के काव्य-पाठ का आयोजन किया। दिल्ली में जन्मे और लंदन में रह रहे मोहन राणा के अब तक 10 कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। हाल ही में उनका नया संग्रह 'पंक्तियों के बीच' पाठकों के बीच आया है। कार्यक्रम में मोहन राणा ने न केवल अपनी कई चर्चित कविताओं का पाठ किया, बल्कि अपनी रचना प्रक्रिया पर भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा, कविता और शब्द-संवेदना के बीच कवि कार्बन कापी की तरह है। कविता दो बार अनूदित होती है, पहली बार जब लिखी जाती है और दूसरी बार जब उसे लिखा या पढ़ा जाता है। मैं कविता की खिड़कियां बनाता हूं, जो हमेशा खुली रहती हैं। काव्य-पाठ के दौरान उन्होंने अपनी चर्चित कविताएं 'पारगमन', 'यह जगह काफी है', 'एक सामान्य दिसंबर का दिन', 'चार चिड़ी तीन इक्के और एक जोकर', 'पानी का रंग', 'छतनार चीड़ की छाया में', 'होगा एक और शब्द' और 'अर्थ शब्दों में नहीं तुम्हारे भीतर है' सुनाईं। इस अवसर पर प्रवासी लेखन और कविता से जुड़े कई प्रमुख लेखक विमलेश कांति वर्मा, नारायण कुमार, अनिल जोशी, विनोद तिवारी और राजकुमार गौतम भी उपस्थित थे।

मोहन राणा